

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हात लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

५१८००(१८०)

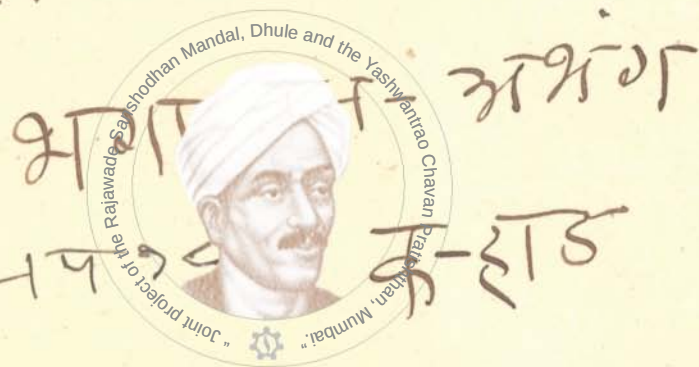
ग्रंथ नाम

विं चरित्रें.
भानुदास सरबुवाई.

विषय

मराठी काव्य.

मराठी-बाड



पुस्तक-क-हाड

॥ जाली कउ गाव पली कउ गा
 ॥ ससमा तसेवती नाव ॥ उगत
 ॥ वसिले पासी पाउव ॥ कउ लास
 ॥ दासीव ॥ पाप्यात लावल दीव
 ॥ गरगरा फीरती नाव ॥ धनजा
 ॥ गधतुसी करणी ॥ तुहनी
 ॥ रमचवा ॥ जागळी
 ॥ कासी ॥ जयेती तीथ
 ॥ सी ॥ मरु ॥ सी कलेजो
 ॥ सी ॥ संकलें सोरती जाव चरा
 ॥ सी ॥ तीथे हातासार ती करसी
 ॥ बोलाव वाल्मीकी ॥ धनजा
 ॥ गाधतुसी ॥ करणी ॥ उगल
 ॥ आवणाच महाना ॥ दोली ॥
 ॥ साचालली ॥ रुखा ॥ जा

या-ने-ना-म-रु-ण्य-क-रा-उ-त्रार-
 ॥ टीकाणा ॥ नवसा-ना-क-र-न-
 ॥ पाळणा ॥ उगतनीललोबाळ
 ॥ कताना ॥ समगातेदीलासे
 ॥ नीः-च-व-फेर-जालाफीरुनीः
 ॥ धनजामा-ध-तुशीकरणीः
 ॥ म्यां-ध-र-लीनयनीः
 ॥ २ ॥ कतौ-त-जामा-ध-
 ॥ रघुशेहे-यां-त्रा-
 ॥ कालीफार-गईठईमरुल
 ॥ बाजार-ना-व-व-री-क-र-नी-व-
 ॥ गाले-व-रुपंता-क-नि-भार-
 ॥ न-जामा-ध-तुशीकरणी-॥ ३ ॥
 ॥ नई-त्र-मा-स-उ-ना-व-
 ॥ न-ती-मा-व-॥ क-सी-गत-हो-

(2A) ७

॥ रे घन नीळ ॥ वारी ती पक
॥ आनी वळ ॥ ने सुन फीलांबर
॥ पीवळा ॥ कृपाळी के दारी री
॥ ॥ गळात तुळसीच्या मा
॥ ॥ रथाची कानीत यारी ॥
॥ जोत बर ॥ न्यारी ॥ रा
॥ मंदास के ॥ री ॥ टाळ म
॥ दगाची ॥ जाती श्रीमं
॥ तस्वी सारी ॥ मस्तक उवीले
॥ नेरणी ॥ धन जाग धतुशी
॥ करणी न ४ ॥ ७ ॥ ०



Digitized by eGangotri
The Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai
Project of Digitization

राधे हा मुकुंद कजीये उच

॥ लोनी घेई घेई ॥ ५॥ हाक

॥ क देई ना मास्या दुध तुंपया

॥ सीवाई ॥ मथी तासी दाती

॥ धरी तो रवी लागी ठाई ठाई ॥

॥ हाटे हाक ना नी नउ मजेस

॥ मजेस बी ॥ हाई ॥ बरे

॥ स मजाउ ॥ तुझा घरा

॥ सी ने हा न रा ॥ राधे ॥ हारी

॥ ज्ञान दे राधा मृदु मृदु बोल

॥ बीती ॥ माझ्या घरा चाल जि

॥ दुध भात काल बीती ॥ पाळण

॥ ते नुज सी ह्मणा नी जउनी

॥ डाल विती ॥ येना दे सी

॥

(3A)

॥ डीकान्हा मास जवळी यड ॥
॥ येई ॥ २ ॥ ४५ ॥ गोवीदा गमा
॥ लाहूर मरु देशाक्षी राक्षी
॥ वासा ॥ जगजीवना वज्रभुष
॥ पागोपीमनसा राजहंसा ॥
॥ नकोर डुंगी गंगे यत्रो देसी
॥ सोडिके तमुरकी ला
॥ वीतेवाटी पई पई ॥ ३५
॥ राधि ॥ उमा ॥ इमोर छेळी
॥ येले सावळी नै ॥ सावरा
॥ धेहारी घरी नै इत जाणे ॥ ह
॥ उगवनी गीत न राहे तुझ्या
॥ मजा वल्लभ ॥ होभाजी चाक
॥ हा खवनी सदा हारी राखी

॥ संत पाउले साजरी ॥ गंगा
 ॥ जाली जाला वरी ॥ १ ॥ संत
 ॥ चेरणीची धुळी ॥ तेथे केल्या
 ॥ म्याजांगोळी ॥ २ ॥ पापे जळा
 ॥ ली बापुडी ॥ काळ गेला देशा
 ॥ धडी ॥ ३ ॥ तुका लागे धन्य जा
 ॥ लो ॥ संत ॥ सीवाले ॥ ४ ॥
 ॥ देव उमासु ॥ गरी ॥ रंगत्री
 ॥ गुणाचा करी ॥ १ ॥ माया पटजे
 ॥ रंगवीला ॥ पंचे कथे मेळवी
 ॥ ला ॥ २ ॥ लुंदाचोरी सीचे ठसे
 ॥ केले वेगळे केसे ॥ ३ ॥ तुका
 ॥ लागे मारी रीवाणी ॥ भट्याचा
 ॥ तो आदणी ॥ ४ ॥ ६० ॥

(4A) ॥ ज्ञानेनावीयेलाउस ॥ तेच ॥

॥ पद्माला रामरस ॥ १ ॥ ज्ञाने ल

॥ वीलायेरुंड ॥ खाने कैसे सु

॥ न तो उ ॥ ३ ॥ ज्याने लावील

॥ धोतरा ॥ वाया गेलं स्वरा

॥ स्वरागवे ॥ जे येवते ते स

अध्यात्मिक
जैकारनासाव



देवता नारायणस्य

नामाचार्यार १११ कायः

बागसरीजाणं ॥ उमातसम् ॥

सामस्योने १२५ त्रीगुणाची

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

समस्त राजाया

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वज्रनक्षत्रमा

॥ खाहा घेउनी पोतडी ॥ तु
॥ काउतरले पैले थडी ॥ ५॥ ०

॥ हम्पसाबाई नीरवीळुचाजा
॥ वतार ॥ पाहनी रामचंद्रगु

॥ सजाले ॥ १॥ ज्ञान करजाता

॥ समधी ॥ २॥ उदकी

॥ मीठाला ॥ ३॥ लक्ष्म

॥ मणपाही ॥ ४॥ मोठे माही ॥ हा

॥ कालवलाही मारीतसे ॥ ५॥ ०

॥ रामराम लणोनी हाकामा

॥ रीतसे ॥ कोठे गुंतला सराम

॥ चंद्रा ॥ ४॥ मजटाकुनी या

॥ हम्परी मीठालासी ॥ परीकै



॥ सारा हासी पाहजाता ॥ ५ ॥

॥ धनुशासी ते वंहा लाउनी या

॥ बाण ॥ हरखेसी माषण क

॥ रीतसे ॥ ५ ॥ ते वंहा रामचे उ

॥ पाहोनी नीधान ॥ दीलु ते

॥ दसवण लक्ष्मण ॥ ७ ॥ येस

॥ वते लक्ष्मणे ॥ वाई माते ॥

॥ दसवण लक्ष्मण ॥ देई ज्ञाता ॥

॥ हां राजे मकली को दे नमो ला

॥ लकं गण मो ॥ ४ ॥ कगं नका

॥ करवार सो वार ॥ लीकी डीकी

॥ कुलु पउपरं कं का कळी मो ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥ नउ मास मो कगं नतयार

॥ बावन लुन्या शे मकती जो



॥ सार कंगने सो ॥ ३ ॥ लाल रंग
॥ नाथ लाल कंगने ॥ गोवाल
॥ नाथ बहेरंग फुन ॥ हुन्गरी
॥ दील सो ॥ हीरंग ॥ ३ ॥ ७ ॥ ०

॥ मैना बोलमिटी बोलमिटी ॥

॥ नयेन पी ॥ ६ ॥ ०

॥ मैना खे ॥ हुटकीवाटी ॥

॥ बोले राम ॥ तंधाटी ॥ मै ॥

॥ मैना राम नाम मुखी बोले ॥

॥ मैना गगन पी जेर डोले ॥ मै ॥

॥ मैना सीव दीन खेचर बोले ॥

॥ बोल बोल न ज्ञांतर डोले ॥ मै ॥

॥ ना बोलमिटी बोलमिटी ॥ ३ ॥

॥ मुद्र सागवा मज पासी ॥

॥ कांयजी लेगमासी ॥ १८ ॥

॥ कैसी जालीस हो ये ठई ॥

॥ माझे सजणी बाई ॥ बहुत

॥ अमली बोलुज काई ॥ होउ

॥ मीउत राई ॥ मुद्र ॥ कोरे

॥ जाहेत ॥ व ॥ रामल

॥ दुमराग ॥ अमल होम

॥ जकीण ॥ मासे जीण ॥ २ ॥

॥ मुद्र ॥ मजल जाणीले राव

॥ णे मागे कै से जाले ॥ कायेव

॥ तले नाही कळले ॥ मौन्य का

॥ हो धरीले ॥ ३ ॥ मुद्र ॥ कीवा

॥ हेउनीया सन्यासी ॥



॥ फीर तो देवो दसी ॥ सज्जा

॥ राम तो मुखं वासी ॥ जातं र

॥ लेमी यासी ॥ ४॥ सुद्रे ॥ ०

॥ सीताराम काची वने ॥ पक्षी

॥ करिती नदन ॥ पुर्ण गहीवर

॥ ती निसीली ॥ गासावीन

॥ दन ॥ ५ ॥ गंगवा ॥ ७॥ ०

॥ आसृत व ॥ नीजे केताजा

॥ नकीते ॥ सकवतनु नीवाली

॥ हर्षजाली मनीते ॥ लगती

॥ कपीमले रेकुंचीर जीव बार ॥

॥ बुडत विहीर डोही धीरुसा

॥ दीधलारे ॥ १॥ ०



॥ चला सरं यानुं सर्वजाउ
 ॥ यागेः सजुनी गोकुल या
 ॥ श्रीरंगे च मागे मागे ॥ ५८ ॥
 ॥ रात्री मोहनी यानदं यत्रा
 ॥ देसी ॥ ने तो जाकुर हारीला
 ॥ गीम थुर ॥ द्विष्टी कैचां
 ॥ मगं पडे ॥ कैसी ॥ जातो
 ॥ शाम राम ॥ मं ग्राम वं
 ॥ यात मां मउ ॥ गी दसा गे घसाग
 ॥ १ ॥ चला ॥ गोकुली चहासा
 ॥ सर्वजाता ॥ जाकुर रायाप
 ॥ उती लुस्या माथां ॥ नको मनु
 ॥ देसी जाउ जग नंथा ॥ जैसै
 ॥ बोलुनी नीदान मंला नव



॥ जाण न जाण जाण साची
 ॥ हाची घसांगे घसांगे ॥ ३ ॥ चलो ॥
 ॥ न के जा कुर हा कुर मोटा
 ॥ बाई ॥ तेणे बोधु नीयं न दे
 ॥ ये गो दाही ॥ ने तो जा मुजा
 ॥ जीव पाण ॥ ने गो दाही ॥ हा
 ॥ रीये के वे ॥ ठ मा ने तया
 ॥ वीण बहा ॥ गंधुण क्षणा
 ॥ जान होला सलांग ॥ ३ ॥ चलो ॥
 ॥ सरवे क्षण भरि रथं नाही था
 ॥ बवीला ॥ द्विष्टि नाही म्यां हा
 ॥ नीपाहीला ॥ गीत नर हारी
 ॥ राये ध्यायं पाये साची माये ल
 ॥ गोही सांगे सांगे ॥ चलो ॥

(8A) ॥जाती॥ १०

॥जारतीजानंतमुजा॥वीवो

॥पंढरीराजा॥नवलीउपमा

॥र॥मनसारलीपुजा॥१॥प

॥देवापारनाही॥नषडनीग

॥माठाई॥मल्लामल्लीआवा

॥लाहोघे॥डी॥जाती॥१॥

॥जलुकी॥बुद्ध॥उमारा

॥हीलानी॥माजनादेनी

॥पाईजउलीवीठ॥जाती॥३॥

॥जाती॥

॥उकटसाधनसीळस्वतवा

॥धुनी॥लींगदेहेलकापुर

॥वीध्वंशानी॥कामक्रोधा

॥ दीकराक्षसं मदीनी ॥ देहे
 ॥ जाहंभाव रावणी वटोनी ॥
 ॥ १ ॥ जयदेव जयदेव जेनी
 ॥ ज बोधिरामा ॥ परमात्मा
 ॥ आरती तुज मेघः वामा ॥
 ॥ जयदेव जयदेव ॥ ८ ॥
 ॥ अथ मूर्ति स्तुति ॥
 ॥ तगेला ॥ दहन करु
 ॥ नीजाखर ॥ गिला ॥ मासी
 ॥ लाज बुं मळी ॥ मुवन ना ठीला ॥
 ॥ जानंदाची गुदी घेउनी या
 ॥ जाला ॥ २ ॥ जयदेव ग जानते
 ॥ ध्वनी वाद्याचा गजर ॥ जाठ
 ॥ राप झंवा नैर उल्लास थोर ॥
 ॥ जायो ध्यसी जाले दवार ॥

॥ नगरी हाता आह ज्ञान ॥
॥ कुमरे ॥ ३ ॥ जय देव ॥ नीज
॥ बळे नीज रात्री सोड विला
॥ सीता ॥ सहज येणे जाले आ
॥ यो ध्या रघुनाथा ॥ ज्ञान देव
॥ हृदय देव गायत्रीता ॥ आर
॥ ती घेउनी ॥ कोसल्या
॥ माते ॥ सहज सी
॥ व्हा सनीरा ॥ बुकीर ॥ सोहो
॥ जाव पुज उचार ॥ सहजा
॥ र्वा आरती वाद्या वागजेर ॥
॥ मधि वंदा स स्वामी आठवी
॥ नारी सर ॥ ५ ॥ जय देव ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com